पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

MONTH- JUNE

CLASS- 7

SUB- SANSKRIT

द्वितीयःपाठः

दुर्बुद्धिः विनश्यति
(दुष्ट बुद्धि वाला नष्ट हैं)

तृतीयः पाठः

स्वावलम्बनम
(आत्मनिर्भरता)

अध्ययन पध्धति

- पाठ वांचन
- पाठ समजूति
- शब्दार्थाः
- प्रश्नोतरी
- अभ्यासकार्य
- व्याकरण
- साहित्य
- प्रवृति

पाठः द्वितीय

दुर्बुद्धिः विनश्यति

(दुष्ट बुद्धि वाला नष्ट हैं)

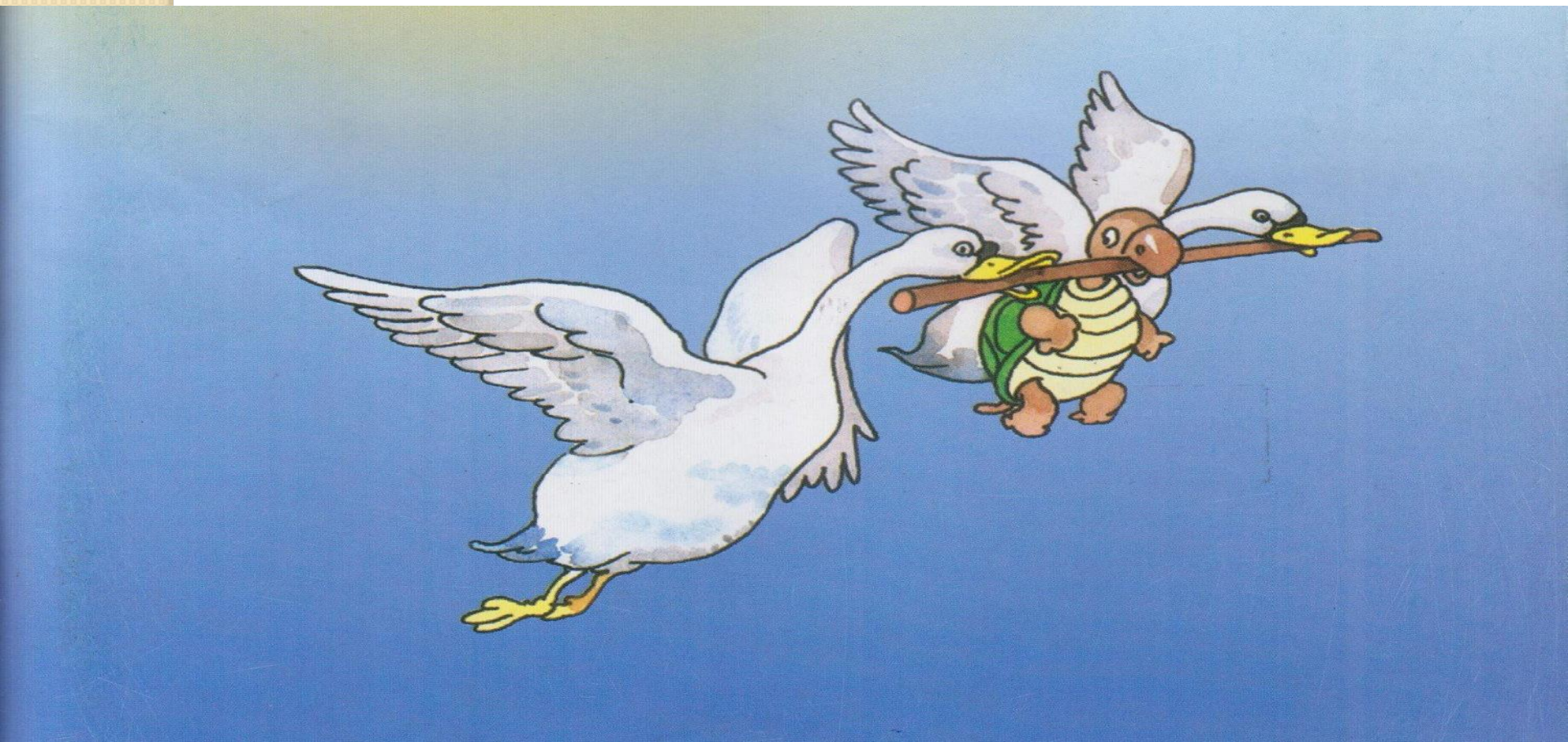

पाठ का परिचय

- प्रस्तुत पाठ की कथा पञ्चतन्त्र नामक ग्रंथ से ली गयी है।
- पञ्चतन्त्र के लेखक पं विष्णुशर्मा है।इस कथा के द्वारा बताया गया है कि अनुचित समय पर बोलने से कैसे सब कुछ नष्ट हो जाता है।
- कभी-कभी मौन रहकर भी कार्य सफल हो जाता है।
- इस पाठ में दो हंस ओर कछुआ कि बात समजाया है कि सोच समज के सहि समय पे बोलना चाहिए।
- कल्याण की इच्छा रखनेवाले मित्रों के वचन को जो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार नही करता है,वह लकडी से गिरे हुए दुष्टबुद्धि कछुए के समान नष्ट होता है।

शब्दार्थाः

- सरः - तालाब
- हंसौ - हंस
- तत्रव - वहा ही
- धोवराः - मछआरे
- श्वः - कल
- चञ्च्वा - चोंच से
- पक्षबलेन - पंखो के बल से
- काष्ठदण्डम - लकड़ी का दण्डा
- सरस्तीरे - तालाब के किनारे
- पौराः - नगरवासियो ने
- काष्ठाद - लकड़ी से
- भ्रष्ट - गिर गया
- पक्त्वा - पकाकर
- खादिष्यामि - खाऊँगा
- क्थमपि - किसी प्रकार

साहित्य

एकपदेन उत्तरत-

क- कूर्मस्य कि नाम आसीत?
उत्तर- कम्बुगोवः

ख- सरस्तीरे के आगच्छन?
उत्तर- धोवराः

ग- कूर्मः केन मार्गे अन्यत्र गन्तुम इच्छति?
उत्तर- आकाशमार्गेण

घ- लम्बमान कूर्म दृष्टवा के अधावन?
उत्तर- पौराः

ङ- कच्छपः कुत्र गन्तुम इच्छति?
उत्तर- अन्यत्र

घ- कूर्मः मित्रयोः वचन विस्मत्य किम अवदत?
उत्तर- यूय भस्म खादत

व्याकरण

अभिनन्दति	भक्षयिष्यामः	इच्छामि	वदिष्यामि	उड्डीयते	प्रतिवसित	स्म

प्र-4 मञ्जूषातःक्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत-

(क) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि **उड्डीयते**।

(ख) अहं किञ्चिदपि न **वदिष्यामि**।

(ग) यःहितकामानां सुहृदां वाक्यं न **अभिनन्दति**।

(घ) एकः कूर्मःअपि तत्रैव **प्रतिवसित** स्म।

(ङ) अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् **इच्छामि**।

(च) वयं गृहं नीत्वा कूर्मं **भक्षयिष्यामः**।

अध्ययन प्रवृति

- साप्ताहिक मूल्यांकन
- हंस ओर कछआ कि कहानी लिखो।

अध्ययन मूल्यांकन

- हंस ओर कछआ की कहानी जाने ओर अच्छ मित्र कि बात माननी चाहिए वो शीखे।
- संस्कत शब्दो के नाम उच्चारण करना शीखे।

पाठः तृतीय

स्वावलम्बनम्

(आत्मनिर्भरता)

पाठ का परिचय

- प्रस्तुत पाठ मे दो मित्रो की कथा के द्वारा वर्णन किया गया है कि स्वावलम्बी मनुष्य सदा सुखी रहता है।
- पराधीन व्यक्ति दुःखी होता है।
- सबको अपना कार्य स्वय करना चाहिए।
- पाठ मे सख्यावाची शब्दो से भी अवगत करवाया गया है।
- कृष्णमूर्ति ओर श्रीकण्ठ दो मित्र,श्रीकण्ठ के पिता धनवान थ। कृष्णमूर्ति के माता-पिता किसान थ। श्रीकण्ठ के घर पे दस नौकर कृष्णमूर्ति के धर पे आठ नौकर दो पैर,दो हाथ, दो आखे ओर दो कान
- कृष्णमूर्ति की सलाह स्वावलन्बन मे तो हमेशा सुख ही है,कभी कष्ट नही होता है।
- श्रीकण्ठ अब मे भी अपना काम स्वय ही करुँगा।

शब्दार्थाः

अष्टादश	-	अठारह
गवाक्षाः	-	खिड़किया
कृषकदम्पती	-	किसान पति-पत्नी
कर्मकराः	-	काम करनेवाले
स्वावलम्बने	-	आत्मनिर्भरता में
स्वकार्याय	-	अपने काम के लिए
अवदत	-	कहा, बोला
मनसि	-	हदय
अधना	-	अब
साम्पतं	-	इस समय
अधोनः	-	निर्भर
भृत्यः	-	नौकर
प्रकोष्ठेष	-	कमरो में
आडम्बरविहीन	-	दिखावा रहित
द्वाराणि	-	दरवाजे
स्तम्भाः	-	खम्भे
व्यजनम	-	पंखे

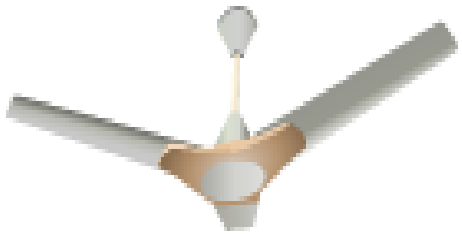

साहित्य

चित्राणि चणयित्वा संख्यावाचकशब्द लिखत

(अष्टादश, पञ्चदश, चर्तुविशतिः, एकविंशति, षटत्रिंशत, त्रयस्त्रिंशत)

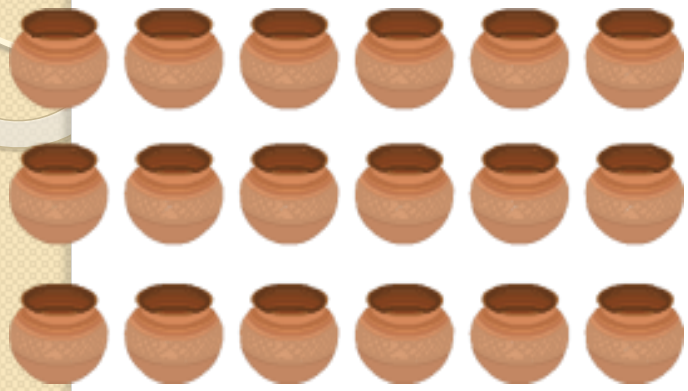

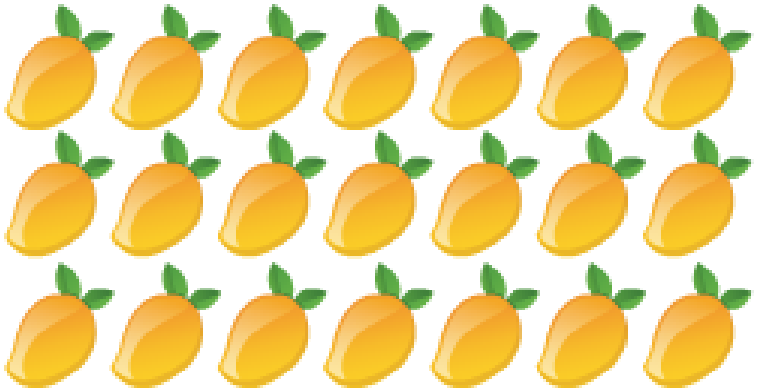

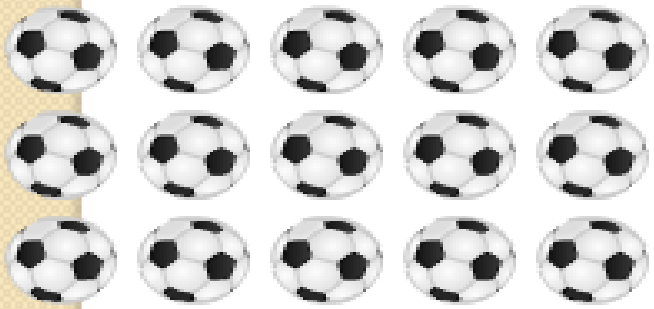

❖ चित्रंदृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-

कृषकाः	कृषकौ	एते	धान्यम्	एषः	कृषकः
एतौ	क्षेत्रम्	कर्षति	कुरुतः	खननकार्यम्	रोपयन्ति

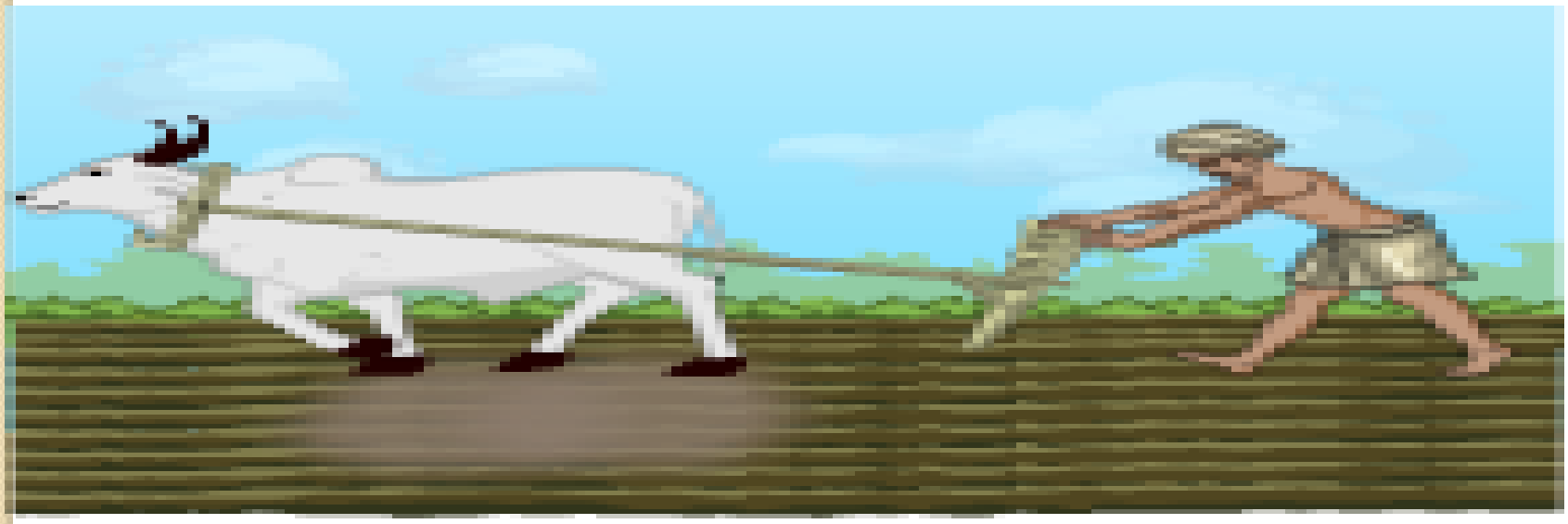

(क) एषः कृषकः क्षेत्रम् कर्षति।
(ख) एतौ कृषकौ खननकार्यम् कुरुतः।
(ग) एते कृषकाः धान्यम् रोपयन्ति।

प्र–6 अधोलिखिता न्समयवाचकान् अङ्का न्पदेषु लिखत-

- 10.30 सार्ध द्दशवादनम्
- 5.00 पञ्चवादनम्
- 7.00 सप्तवादनम्
- 3.30 सार्धत्रिवादनम्
- 2.30 सार्धद्विवादनम्
- 9.00 नववादनम्
- 11.00 एकादशवादनम्
- 12.30 सार्धद्वादशवादनम्
- 4.30 सार्धचुतर्वादनम्
- 8.00 अष्टवादनम्
- 1.30 सार्धएकःवादनम्
- 7.30 सार्धसप्तवादनम्

अध्ययन प्रवृति

- साप्ताहिक मूल्यांकन
- १ से ५० संख्यावाचक शब्द लिखत।

अध्ययन मूल्यांकन

- शब्दो के नाम संस्कत में जाने।
- संख्यावाचकशब्द उच्चारण करना शीखे।
- अपना काम स्वय करना शीखे।

Thank
you